Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095

महाकाव्य महाभारत में महारानी द्रौपदी

प्रिया सिंह
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,उत्तर प्रदेश

डॉ.देवनारायण पाठक
संस्कृत–विभागाध्यक्ष
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज,उत्तर प्रदेश

Article Info
Volume 5, Issue 1
Page Number : 117-122

Publication Issue :
January-February-2022

Article History
Accepted : 01 Feb 2022
Published : 10 Feb 2022

सारांश–महाभारत में महारानी द्रौपदी यज्ञ कुण्ड में शची देवी के अंश के रूप में जन्म लेती हैं। धर्मज्ञा, धर्मदर्शिनी आदि विशेषण उनके पांडित्य को व्यक्त करते हैं। द्रौपदी अप्रितम सुन्दरी थी। बुद्धिमत्ता, ज्ञान और चारित्रिक बल में भी उसकी जोड़ की युवती मिलनी कठिन है। महाभारतकालीन नारियाँ यद्यपि कि अपने पूर्वकालीन नारियों की अपेक्षा ज्यादा स्वतंत्र थीं, परन्तु द्रौपदी का चरित्र महाभारत में अत्यधिक निर्भीक नारी के रूप में भी चित्रित है। दौपदी के जन्म से लेकर अन्त तक के प्रमुख सन्दर्भों को क्रमवार प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द–धर्मदर्शिनी, याज्ञसेनी, पौराणिक, ब्रह्मतुल्य, द्वैतवन, अभ्यर्थना, सैरन्ध्री, प्रतिविन्ध्य।

पांचाल प्रदेश के अधिपति महाराज द्रुपद के यहाँ यज्ञ कुण्ड में शची देवी के अंश से द्रौपदी का जन्म हुआ था। द्रौपदी के जन्म के समय यह आकाशवाणी हुई थी कि – इस कन्या का नाम कृष्णा है; यह समस्त युवतियों में श्रेष्ठ एवं सुन्दरी है। क्षत्रियों का संहार करने के लिए प्रकट हुई है। यह यथासमय देवताओं का कार्यसिद्ध करेगी और इसके द्वारा कौरवों को महान् क्षय प्राप्त होगा। द्रौपदी ने एक गृहशिक्षक से बृहस्पति राजनीति की शिक्षा ली थी। पंडिता, पतिव्रता, धर्मज्ञा, धर्मदर्शिनी आदि विशेषणों से उनके पांडित्य का अंदाज लगाया जा सकता है।[1] द्वैतवन में युधिष्ठिर के साथ हुए उनके कथोपकथन से पता चलता है कि वे अनेक पौराणिक उपाख्यानों एवं राजधर्म को भली–भाँति जानती थीं। कृष्ण के दूतरूप में कुरु सभा में जाने से पहले उन्होंने जो कुछ कहा था उससे भी उनके राजनीतिक ज्ञान का परिचय मिलता है। सत्यभामा के साथ विश्रम्भालाप के समय भी उनके पातिव्रत्य धर्म की अभिज्ञता देखकर दांतों तले उँगली दबानी पड़ती है। अतिथि की अभ्यर्थना किस तरह करनी चाहिए यह भी वह अच्छी तरह जानती थीं। अपने दैनिक कार्यों के संबंध में अपने मुख से उन्होंने जो कुछ कहा है, उससे पता चलता है कि रोज हजारों आदमियों के खाने–पीने का तत्वावधान उन्हीं को करना पड़ता था। सैकड़ों दास दासियों के कामकाज पर नजर रखना, समय पर उन्हें वेतन देना, उनके अभावादि पर लक्ष्य रखना आदि अन्तःपुर के हर कार्य का भार उन्हीं के कंधों पर था। राजकोष के आय व्यय के हिसाब रखने का दायित्व भी उन्हीं पर था। वह अकेली ही सब हिसाब रखती थी।[2] इतनी क्षमता तथा पांडित्य महाभारत में दूसरी किसी भी गृहिणी में दिखाई नहीं पड़ती।

महाभारत के उद्योगपर्व में द्रौपदी श्रीकृष्ण से कहती है कि मैं महाराज द्रुपद की पुत्री हूँ। यज्ञवेदी के मध्यभाग से मेरा जन्म हुआ है। मैं वीर धृष्टद्युम्न की बहिन और आपकी प्रिय सखी हूँ। मैं परम प्रतिष्ठित अजमीढकुल में व्याह कर आयी हूं। महात्मा राजा पाण्डु की पुत्रवधू तथा पाँच इन्द्रों के समान तेजस्वी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

पाण्डुपुत्रों की पटरानी हूँ। पाँच वीर पतियों से मैंने पाँच महारथी पुत्रों को जन्म दिया है। श्रीकृष्ण! जैसे अभिमन्यु आपका भान्जा हैं, उसी प्रकार मेरे पुत्र भी धर्मतः आपके भानजे ही हैं। केशव! इतनी सम्मानित और सौभाग्यशालिनी होने पर भी मैं पाण्डवों के देखते–देखते और आपके जीते–जी केश पकड़कर सभा में लायी गयी और मेरा बारंबार अपमान किया गया एवं मुझे क्लेश दिया गया। पाण्डवों, पांचालों और यदुवंशियों के जीते–जी मैं पापी कौरवों की दासी बनी और उसी रूप में सभा के बीच में मुझे उपस्थित होना पड़ा।[3]

द्रौपदी सत्यभामा से कहती है कि कुन्तीदेवी के पाँचों पुत्र ही मेरे पति हैं। वे सूर्य और अग्नि के समान तेजस्वी, चन्द्रमा के समान आह्लाद प्रदान करने वाले, महारथी, दृष्टिमात्र से ही शत्रुओं को मारने की शक्ति रखने वाले तथा भयंकर बल–पराक्रम एवं प्रताप से युक्त हैं। मैं सदा उन्हीं की सेवा में लगी रहती हूँ। देवता, मनुष्य, गन्धर्व, युवक, बड़ी सजधजवाला धनवान् अथवा परम सुन्दर कैसा ही पुरुष क्यों न हो, मेरा मन पाण्डवों के सिवा और कहीं नहीं जाता। पतियों और उनके सेवकों को भोजन कराये बिना मैं कभी भोजन नहीं करती, उन्हें नहलाये बिना कभी नहाती नहीं हूँ तथा पतिदेव जब तक शयन न करें, तब तक मैं सोती भी नहीं हूँ। खेत से, वन से, अथवा गाँव से जब कभी मेरे पति घर पधारते हैं, उस समय मैं खड़ी होकर उनका अभिनन्दन करती हूँ तथा आसन और जल अर्पण करके उनके स्वागत–सत्कार में लग जाती हूँ। मैं घर के बर्तनों को माँज–धोकर साफ रखती हूँ। शुद्ध एवं स्वादिष्ट रसोई तैयार करके सबको उचित समय पर भोजन कराती हूँ। मन और इन्द्रियों को संयम में रखकर घर में गुप्तरूप से अनाज का संचय रखती हूँ। और घर को झाड़–बुहार, लीप–पोतकर सदा स्वच्छ एवं पवित्र बनाये रखती हूँ। मैं कोई ऐसी बात मुँह से नहीं निकालती, जिससे किसी का तिरस्कार होता हो। दुष्ट स्त्रियों के सम्पर्क से सदा दूर रहती हूँ। आलस्य को कभी पास नहीं आने देती और सदा पतियों के अनुकूल बर्ताव करती हूँ। पति के किये हुए परिहास के सिवा अन्य समय में नहीं हँसा करती, दरवाजे पर बार–बार नहीं खड़ी होती, जहाँ कूड़े–करकट फेंके जाते हों, ऐसे गंदे स्थानों में देर तक नहीं ठहरती और बगीचों में भी बहुत देर तक अकेली नहीं घूमती हूँ। नीच पुरुषों से बात नहीं करती, मन में असंतोष को स्थान नहीं देती और परायी चर्चा से दूर रहती हूँ। न अधिक हँसती हूँ और न अधिक क्रोध करती हूँ। क्रोध का अवसर ही नहीं आने देती। सदा सत्य बोलती और पतियों की सेवा में लगी रहती हूँ। पतिदेव के बिना किसी भी स्थान में अकेली रहना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है। मेरे स्वामी जब कभी कुटुम्ब के कार्य से कभी परदेश चले जाते हैं, उन दिनों में फूलों का श्रृंगार नहीं धारण करती, अंगराग नहीं लगाती और निरन्तर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करती हूँ। मेरे पतिदेव जिस चीज को नहीं खाते, नहीं पीते अथवा सेवन नहीं करते, वह सब मैं भी त्याग देती हूँ।[4]

प्रज्वलित अग्नि से उत्पन्न होने के कारण द्रौपदी को लोग याज्ञसेनी तथा कृष्ण वर्ण की होने के कारण कृष्णा नाम से जानते हैं। द्रौपदी अप्रितम सुन्दरी थी। बुद्धिमत्ता, ज्ञान और चारित्रिक बल में भी उसकी जोड़ की युवती मिलनी कठिन है। द्रौपदी की शिक्षा–दीक्षा राजा द्रुपद के दरबार में बड़े सुव्यवस्थित ढंग से हुयी थी। द्रौपदी ने एक गृह शिक्षक से बृहस्पति तथा राजनीति की शिक्षा ली थी। 'पण्डिता' पतिव्रता, धर्मज्ञा, धर्मदर्शिनी आदि महाभारत में प्रयुक्त उनके लिए जो विशेषण उनसे उसके पाण्डित्य का अनुमान लगाया जा सकता है।[5] युधिष्ठिर के साथ हुए उनके कथोपकथन से पता चलता है कि वे अनेकों पौराणिक उपाख्यानों एवं राजधर्म को भली प्रकार से जानती थी। कृष्ण के दूत रूप में सभा में जाने से पहले उन्होंने जो कुछ कहा था उससे भी उनके राजनैतिक ज्ञान का परिचय मिलता है।[6]

सत्यभामा के साथ विश्रम्भालाप के समय भी उनके पातिव्रत्य धर्म की अभिज्ञता देखकर दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। अतिथि की अभ्यर्थना किस तरह करनी चाहिए, यह भी वह अच्छी तरह जानती थीं।[7] अपने दैनिक कार्यों के सम्बन्ध में अपने मुख से उन्होंने जो कुछ कहा है उससे पता चलता है कि प्रतिदिन हजारों व्यक्तियों के खाने–पीने की व्यवस्था उन्हें ही करनी पड़ती थी। सैकड़ों दास–दासियों के

काम का ध्यान रखना, समय से वेतन देना, उनके अभावादि पर लक्ष्य रखना आदि। अन्तःपुर के हर कार्य का भार उन्हीं के कंधों पर था। राजकोश के आय–व्यय का हिसाब रखने का दायित्व भी उन्हीं पर था। द्रौपदी के समान जितनी क्षमता तथा पाण्डित्य महाभारत में किसी भी दूसरी गृहणी में दिखायी नहीं पड़ती।

महाभारतकालीन नारियाँ यद्यपि कि अपने पूर्वकालीन नारियों की अपेक्षा ज्यादा स्वतंत्र थीं, परन्तु द्रौपदी का चरित्र महाभारत में अत्यधिक निर्भीक नारी के रूप में भी चित्रित है। उनके निर्भीकतापूर्ण कथनों के अनेक उदाहरण महाभारत में भरे पड़े हैं। जैसे उन्होंने अपने स्वयंवर सभा में ही चिल्ला कर कहा था – 'नाऽहं वारयामि सूतम्' अर्थात् मैं सूतपुत्र का वरण नहीं करूँगी। यद्यपि स्वयंवर का तो अर्थ ही होता है कि मनोवांछित वर के गले में माला डालना, परंतु द्रौपदी के साथ ऐसा नहीं था, जो भी पुरुष उनके स्वयंवर की शर्त पूरी करता उन्हें उसके गले में माला डालनी पड़ती, परंतु द्रौपदी से पूर्व अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका की स्वयंवर सभा में भी ऐसी ही परिस्थिति उपस्थित हुई थी जबकि अम्बा ने अपने स्वयंवर के पूर्व ही अपने वर का वरण कर लिया था, परंतु भीष्म जब इन कन्याओं को उठा कर ले जाने लगे तो अम्बा ने कहीं भी यह नहीं कहा कि मैंने अपने वर का वरण कर लिया है। यद्यपि कि बाद में उन्होंने बहुत निर्भीकता दिखलायी, परंतु द्रौपदी जैसी निर्भीकता का उनमें भी अभाव था।

'द्रौपदी' का नाम आते ही इनके पाँच पतियों का स्मरण स्वतः हो जाता है। साधारणतया भारतीय नारियों के एक पति होते हैं, कुछ समृद्ध परिवारों तथा राजघरानों में एक पति की अनेक पत्नियाँ भी होती थीं; किन्तु द्रौपदी एकमात्र ऐसी नारी है, जिनके पाँच पति हैं। भारत के उत्तर–पूर्वी क्षेत्रों में बहुपतीक विवाह की प्रथा प्रचलित थी; किन्तु कौरव अर्थात् कुरूवंश उत्तर–भारत के हस्तिनापुर नामक स्थान पर परिवर्द्धित हुआ। भारत के किसी अन्य क्षेत्र में बहुपतीक विवाह का उल्लेख नहीं है। द्रौपदी का विवाह स्वयं में अनुपम है। द्रौपदी यद्यपि पाँच पतियों की पत्नी थी, किन्तु द्रौपदी की गिनती पतिव्रता नारियों में ही होती है। यह द्रौपदी में आदर्श स्त्री का ही गुण है कि सास कुन्ती के मुख से अनजाने में निकली हुई बात की उन्होंने प्रतिष्ठा रखी और पाँच पतियों को स्वीकार किया। यद्यपि वह वहाँ इस बात का विरोध भी कर सकती थीं और सिर्फ अर्जुन को स्वीकार करने की बात कह सकती थीं, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।

वनपर्व में युधिष्ठिर के साथ हुए उनके वार्तालाप में क्षत्रिय नारी सुलभ महाशक्ति का परिचय मिलता है।[8] जुए में युधिष्ठिर द्वारा दाव पर लगाये जाने तथा हार जाने पर दुःशासन के हाथों अपमानित होकर भी उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा। धृतराष्ट्र की सभा में आकर असहाय द्रौपदी ने सर्वप्रथम राजा धृतराष्ट्र की ओर देखा। फिर उसने भीष्म, द्रोण, विदुर और उन्हीं जैसे अन्य सुधीसज्जनों की ओर आशाभरी दृष्टि से देखा। सभी के झुके हुए चेहरों से विवशता टपक रही थी। द्रौपदी को लगा वे तो उससे भी अधिक दुर्बल और असहाय हैं। वह तड़प उठी – 'धिक्कार है भरतवंश के क्षत्रियों को! क्या यही धर्मनिष्ठ सम्राटों की परंपरा है? पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण और महात्मा विदुर के सामने यह अनिष्ट हो रहा है और वे चुप हैं उनका आत्मबल कहाँ चला गया? मैं धर्मज्ञ सभासदों से पूछती हूँ कि इन छली पापात्माओं ने धर्मराज को जुआ खेलने के लिए मीठी–मीठी बातें बनाकर और छल करके उन्हें और उनके सर्वस्व को जीत लिया।

धर्मराज ने पहले अपने भाइयों को, तब अपने को हारकर मुझे दांव पर लगाया है। मैं यह जानना चाहती हूँ कि अपने को हार जाने के बाद मुझे दांव पर लगाने का अधिकार उन्हें था या नहीं? मैं आप लोगों से पूछती हूँ। द्रौपदी को प्रश्न मानों एक नयी चुनौती के रूप में सामने आकर खड़ा हो गया। द्रौपदी ने सभा में अपने पतियों को भी खूब धिक्कारा। उन्होंने कहा कि भीमसेन के बल को धिक्कार है, अर्जुन के गाण्डीव को धिक्कार है जो उन नराधमों द्वारा मुझे अपमानित होता देखकर भी सहन करते रहे। सत्पुरुषों द्वारा आचरण में लाया गया यह सनातन धर्म है कि निर्बल पति भी अपनी पत्नी की रक्षा करने का प्रयत्न करते हैं। द्रौपदी के ऐसे वक्तव्य से यह पता चलता है कि समय आने पर वह अपने पतियों को भी अच्छे–बुरे का

अनुभव कराती थी। जुए में पतियों द्वारा हारी गयी अपमानित द्रौपदी का पति युधिष्ठिर के लिए दो चार कटु वाक्यों का प्रयोग करना उस समय उनके लिए स्वाभाविक था, लेकिन पातिव्रत्य के अलावा और किस प्रवृत्ति ने उनकी इस स्वाभाविक इच्छा का दमन किया, यह कहा नहीं जा सकता। इस तरह के चित्तविक्षेप के समय भी वे विकल नहीं हुई। वनवासकाल में अम्लानवदना द्रौपदी ने सब तरह के दुःख कष्ट सहे। उनके चरित्र सदृश मृदु–कठोर नारीचरित्र महाभारत में एक भी नहीं है।

प्रकृति ने नारी में कुछ ऐसी सुविधाओं को दिया कि वह ब्रह्मतुल्य हो गयी, वह सुविधा है गर्भधारण करना, संतानोत्पत्ति तथा संतान का भरण–पोषण करने की क्षमता ये सुविधाएं पुरुषों को प्राप्त नहीं। मातृत्व ग्रहण करना किसी भी स्त्री के लिए सर्वोच्च गौरव है। माता के रूप में नारी सभी वर्ग के लोगों में आदरणीया बन जाती है। नारी का गौरव और भी ज्यादा बढ गया जब उसकी संतान अपने पुण्य कर्मों के द्वारा समाज में आदरणीय बन जाता है। कुपुत्रों की माताएँ हेय दृष्टि से देखी जाती हैं तथा सत्पुत्रों की माताएँ देश, काल से ऊपर उठकर अमर हो जाती हैं। पत्नी के लिए पति सेवा सर्वोच्च धर्म है। पति पूर्ण आस्था के साथ स्वयं को सूक्ष्म रूप में पत्नी के गर्भ में उपस्थित करता है तथा पत्नी पूर्ण मनोयोग से उसका भरण–पोषण सभी प्रकार के क्लेशों को सहन करके भी करती है। इस महान् कार्य के कारण वह पति तथा संतान दोनों के बीच सेतु का कार्य तो करती ही है, दोनों के लिए आदरणीया बन जाती है तथा दोनों के द्वारा रक्षित भी होती है।

द्रौपदी एक आदर्श कन्या, आदर्श पत्नी के साथ–साथ आदर्श माता भी थी। द्रौपदी के पाँच पतियों से पाँच पुत्र थे। युधिष्ठिर से प्रतिविन्ध्य नामक पुत्र हुआ। ब्राह्मणों ने प्रतिविन्ध्य नामकरण इसलिए किया, क्योंकि उनका उद्देश्य था कि युधिष्ठिर का पुत्र प्रहार वेदना के ज्ञान में विन्ध्य के समान अटल हो।[9] भीमसेन से सुतसोम नामक पुत्र हुआ, यह सोम एवं सूर्य के समान तेजस्वी था। वह महान् धनुर्धर था।[10] अर्जुन से महान् एवं विख्यात कर्म करने वाला श्रुतकर्मा हुआ।[11] नकुल से कीर्तिवर्धक पुत्र शतानीक हुआ[12] तथा सहदेव से श्रुतसेन नामक पुत्र उत्पन्न हुआ।[13] द्रौपदी ने अपने पुत्रों में एकता का सूत्र पिरोकर उन्हें एक दूसरे का हितैषी बना दिया।[14] द्रौपदी एक ममतामयी माँ है और उसी के अनुरूप अपने पुत्रों के लिए सदा कल्याण की कामना करती है। उन्होंने शैशवावस्था में अपने पुत्रों को पूर्ण ब्रह्मचर्य के लिए धौम्य मुनि के आश्रम में वेदाध्ययन के लिए भेजा। तदुपरान्त इन्द्रप्रस्थ वापस आकर वे अर्जुन से धनुर्विद्या का ज्ञान प्राप्त करने लगे।[15] जब तक सम्भव हुआ द्रौपदी अपने पुत्रों के प्रति सचेष्ट रहीं। द्यूत–प्रसंग के पश्चात् सर्वस्व हार कर जब वे पाण्डवों के संग वन को चली तब धृष्टद्युम्न के साथ अपने पाँचों पुत्रों को पिता के घर भेज देती हैं।[16] जिससे उनकी समुचित शिक्षा–दीक्षा हो सके। उसे अपने पुत्रों की वीरता का बड़ा गर्व है, जो स्वाभाविक भी है।

अश्वत्थामा द्वारा पुत्रों की मृत्यु का समाचार सुनकर वह दुःख से विह्वल हो उठती है एवं अन्न आदि से विमुख होकर प्राण त्याग करने का निश्चय करती है।[17] इसी प्रकार 'स्त्रीपर्व' में वह पुत्रवियोग से दुःखी होकर रोते हुए कुन्ती से कहती है कि अपने पुत्रों से हीन होकर अब इस राज्य से हमें क्या कार्य है? [18] इन सभी विशेषताओं के साथ द्रौपदी में नारीसुलभ चपलता, भय, उत्कंठा आदि गुण भी दृष्टिगत होते हैं। इन्द्रप्रस्थ के अलौकिक सभा भवन में दुर्योधन के जल में गिर जाने पर वह खिलखिला कर हँस पड़ती है।[19] इसी प्रकार घोषयात्रा के प्रसंग में दुर्योधन के गंधर्व द्वारा किये गये अपमान बंधन से वह प्रसन्न हो उठती है।[20] वन में भयंकर आकृति वाले किर्मीर राक्षस को देखकर वह भयभीत होकर दोनों नेत्र बन्द कर लेती है और मूर्च्छित हो जाती है।[21] गन्धमादन पर्वत पर विलक्षण सौगन्धिक पुष्प को देखकर वैसे ही अन्य पुष्पों को पाने हेतु वह उत्कंठित हो उठती है।[22] द्रौपदी यद्यपि राजपुत्री एवं राजभार्या है, तथापि उसे अनेक कलाओं में निपुणता प्राप्त है। गृहकलाओं एवं केश–प्रसाधन कला में वह प्रवीण है।[23] सैरन्ध्री के रूप में जब वह रानी

सुदेष्णा के श्रृंगारार्थ नियुक्त की जाती हैं, अपनी श्रृंगार कला और सेवा भावना में शनी का हृदय जीत लेती है। भारतीय समाज में यह एक आम धारणा है कि द्रौपदी पतिव्रता, साध्वी, धैर्यशील एवं दूरदर्शी महिला थी। परन्तु इस आम धारणा के विरुद्ध द्रौपदी के जीवन से संबंधित निम्न ऐतिहासिक तथ्य विशेष रूप से उल्लेखनीय हैः

- द्रौपदी का जन्म राजा द्रुपद द्वारा कराये गये एक यज्ञ में यज नामक ब्राह्मण द्वारा द्रुपद की पत्नी से संभोग करने के बाद हुआ था। इस प्रकार राजा द्रुपद की पत्नी द्रौपदी नियोग प्रथा द्वारा पैदा हुई थी।
- द्रौपदी को अर्जुन स्वयंवर में जीत कर लाये थे, इसलिए उसको अर्जुन की पत्नी के रूप में ही रहना चाहिए थी। उस समय की व्यवस्थाओं को तोड़कर द्रौपदी द्वारा पांच पतियों की पत्नी बनकर रहना एक अधर्म का कार्य किया था।
- युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी को जुएं में हार जाने के बाद दुशासन द्वारा कौरव सभा में सभी कौरव–पाण्डव योद्धाओं के सामने द्रौपदी का घोर अपमान किया गया था और इस कारण द्रौपदी ने अपने इस अपमान का बदला लेने की इच्छा से पाण्डवों एवं श्रीकृष्ण को बार–बार ताना देते हुए कौरवों से युद्ध करने हेतु उकसाकर युद्ध की पृष्ठभूमि बनाने में बहुत बड़ा योगदान दिया था। निःसंदेह द्रौपदी का अपमान हुआ था और ऐसी दशा में हर व्यक्ति में बदला लेने की भावनाएं विकसित हो ही जाती हैं।[24]

सन्दर्भ–सूची

1. प्रिया च दर्शनीया च पंडिता च पतिव्रता। –महाभारत, वनपर्व, 27.2.
2. वही, वनपर्व, अध्याय 232.
3. महाभारत, उद्योगपर्व, भगवद्यानपर्व, 132.21–25.
4. महाभारत, वनपर्व, द्रौपदीसत्यभामासंवादपर्व, 233.22–31, पृ. 760–761.
5. महाभारत, वनपर्व
6. महाभारत, उद्योगपर्व
7. महाभारत, वनपर्व
8. महाभारत, वनपर्व, 28.12–36.
9. महाभारत, आदिपर्व, 220.81.
10. महाभारत, आदिपर्व, 220.82.
11. महाभारत, आदिपर्व, 220.83.
12. महाभारत, आदिपर्व, 220.84.
13. महाभारत, आदिपर्व, 220.85.
14. महाभारत, आदिपर्व, 220.86.
15. महाभारत, आदिपर्व, 220.88.
16. महाभारत, वनपर्व, 24.46.
17. महाभारत, सौप्तिकपर्व, 11.6–16.
18. महाभारत, स्त्रीपर्व, 15.13.
19. अमरचन्द सूरी, बालभारत, 2.4.84.
20. चप्पूभारत, स्तवक 5, पृ. 65.

21. महाभारत, वनपर्व, 12.16.56.
22. महाभारत, वनपर्व, 146.8—11.
23. महाभारत, विराटपर्व, 3.17.11.
24. सन्त, के.एन., महाभारत के महापात्र, बहुजन चेतना मण्डल प्रकाशन, लखनऊ, 2011—12, पृ.. 14.